रिकॉर्ड:- आखिर वो दिन आया.... ओम शान्ति: प्रातःक्लास 18-7-67

रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते है। समझायेंगे तो जरूर शरीर दवारा ही नां। आत्मा शरीर बिना कोई भी काम नही कर सकती है। रूहानी बाप को भी एक ही बार पुरूषोतम संगम युग पर शरीर लेना पड़ता है। यह संगम युग भी है। इनको पुरूषोतम युग भी कहेंगें। क्योंकि इस संगम युग के बाद ही फिर सतयुग आता है। सतयुग को भी पुरूषोतम युग कहा जाता है। यह भी पुरूषोतम युग है। बाप आकर स्थापना भी पुरूषोतम युग की ही करते है। संगम पर आते है तो वो जरूर ही पुरूषोतम युग है। यहाँ ही बच्चों को पुरूषोतम बनाते है। फिर तुम पुरूषोतम बन कर नई दुनियाँ में रहते हो। पुरूषोतम अर्थात उत्तम ते उत्तम पुरूष। यह है (ल-न) सबसे उत्तम पुरूष। यह ज्ञान भी तुमको ही है। और धर्म वाले भी मानेंगें कि बरोबर यह हेवन का मालिक है। भारत की महिमा बडी भारी है परन्तु भारतवासी ही नही जानते है। कहते भी है कि फलाना स्वर्गवासी हुआ। स्वर्ग चीज क्या है वो पता ही नही है। आप ही सिध करते है कि वो स्वर्ग मे गया, तो माना है कि खुद नर्क मे है। और वो भी पहले नर्क मे था। हेवन तो= तब हो जब कि बाप स्थापन करे। वो तो नई दुनियाँ को ही कहा जाता है। दो चीजे है नां। स्वर्ग और नर्क। मनुष्य तो स्वर्ग को लाखों वर्षों का कह देते है। तुम बच्चे समझते हो कि कल स्वर्ग था तब इन्होने राजाई की थी। अब फिर बाप से वर्सा ले रहे है। बाप कहते है कि मेरे लाडले बच्चो तुम्हारी आत्मा पतित है इसलिये ही हेल मे हो। भल करके कहते है कि कलयुग 40 हजार वर्ष का है। फिर भी कलयुग तो है नां। तो जरूर कलयुग वासी ही कहेंगें। पुरानी दुनियाँ ही तो है नां मनुष्य तो बिचारे घोर अंधेरे मे है। पिछाडी मे जब आग लगेगी तो यह सब खत्म हो जावेगा। तुम्हारी प्रीत बुधी है परन्तु नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। जितना-2 प्रीत बुधी होगी उतना ही ऊंच पद पावेंगें। सवेरे उठ कर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भले प्रेम के आंसु भी आवे। क्योंकि बहुत समय के बाद आकर बाप मिलता है। बाबा आप तो हमको दुःख से आकर छुडाते हो। इस विषय सागर मे गोते खाते हुये कितने दुःखी होते आये है। अभी तो सड़े है रौरव नर्क। विषय वैतरणी नदी मे सभी पडे हुये है नां। अभी तुम बच्चों को बाबा ने सारे चक्र का राज समझाया है। मूल वतन क्या है वो भी पहले तो तुम जानते नही थे। अपने को पतित भ्रष्टाचारी अपने को आप ही कहते है। इनको कहते है कांटो का जंगल। स्वर्ग को कहा जाता है गार्डन आफ अल्लाह। फूलो का बगीचा। बाप को बागवान कहते है नां। तुमको फूल से फिर कांटा कौन बनाते है? रावण? तुम बच्चे समझते हो कि बरोबर भारत स्वर्ग था। अब जंगल है। जंगलमे तो जनावर बिच्छु टिण्डन आद सब कुछ रहते है। सतयुग मे कोई खौफनाक जनावर आद नही होते है। शास्त्रो मे तो बहुत गपोडे लगा दिये है। कृष्ण को सांप ने डसा फिर यह हुआ। कृष्ण को ही फिर दवापुर मे ले गये है। बाप ने समझाया कि भक्ति तो बिलकुल ही अलग चीज है। दुर्गति मे गिराने वाली है। ज्ञान सागर एक ही बाप है। ऐसे नही है कि ब्रहमा वा शंकर वा विष्णु को ई ज्ञान का सागर है। नही। पतित पावन भी एक ही ज्ञान के सागर को ही कहेंगें। ज्ञान से ही मनुष्य की सदगति होती है। सदगति के स्थान दो है। मुक्तिधाम और जीवन मुक्ति धाम। अब तुम बच्चे जानते हो कि यह राजधानी स्थापन हो रही है परन्तु है गुप्त। बाप ही आकर आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे है। और तो सभी अपने-2 चोले ही मे आते है। बाप को अपना चोला तो है नही। इसलिये ही इनको निराकार गाड फादर कहा जाता है। बाकी सब है साकार। इनको कहा जाता है इनकारपोरियल गाड फादर, इनकारपोरियल आत्माओं का। तुम आत्माये भी वहाँ ही रहती हो। बाप भी वहाँ रहते है। वहाँ पर मूल वतन मे कोई भी आवाज का गम नही है। सूक्ष्म वतन का तो कोई पार्ट ही नही है। वो तो चिटचैट का है। पियर घर से ससुर घर जाते है तो संगम पर मिलते है। वो है बीच की मुलाकात बाकि तो वहाँ पर कुछ भी रखा हुआ नही है। यह सब है साक्षात्कार। बाप कहते है कि तुम्हारा कल्याण त

है ही एक बात मैं। [illegible] को याद करो, मनमनाभव। [illegible]। बाप का [illegible]। [illegible] नहीं

वर्सा तो अडरूटुड ही है। अप्, कोयाद किया तो वर्सा तो है ही है। वर्सा है सतयुग नई दुनिया का। इस पुरानी दुनियां का विनाश भी जरूर होना ही है। अमर पुरी मे जाना ही है। अमरनाथ तुम पार्वतियों को अमर कथा सुनाते है। बाकी तो सभी है गपोडे। तीर्थों पर कितने ही मनुष्य जाते है। अमरनाथ पर कितने जाते है। वहां पर तो कुछ भी नही है। सभी है ठगी। पहाडी पर पार्वती को कैसे बैठ कर कथा सुनावेंगे। झूठ ही झूठ है सच्च की तो रती भी नही है। तो सब तिलसम (जादु) गाया भी जाता है नां झूठी दुनियां झूठी माया...इसका भी तो अंत होना चाहिये नां। यहां पर है ही झूठ। यह भी ज्ञान की बात है। ऐसे नही कि गिलास को गिलास कहना झूठ है। भक्ति मार्ग मे ताम सभी झूठ है। सच्च बोलने वाला एक ही बाप है। अभी तुम जानते हो कि बाबा आकर सच्ची-2 सत्यनारायण की कथा सुनाते है। झूठे पत्थर झूठे मोती भी होते है नां। आजकल तो झूठ का बहुत ही है। उनकी चमक ऐसी होती है जो कि सच्च से भी अच्छी। यह झूठे पत्थर पहले नही थे। पीछे विलायत से आये है झूठे सच्चे मिला देते थे तो पता ही नही पड़ता था। फिर ऐसी चीजे आई जिसेस ही परखते थे। मोती भी ऐसे ही झूठे निकले थे जो कि जरा भी पता नही पड़ता था। अब यह तो है वे सच्चे। कहते भी है नां कि सच्च कब भी छुप नही सकता है। बाप जब आते है तो आकर सच्ची कथा सुनाते है। तुम कथा को कोई श्रेय नही रहता है। श्रेय वाले फिर आते नही है। पुर्दशनीमे कितने ढेरो आते है। बाप कहते है कि अब बडे-2 दुकान निकालो। बाकी तो सभी है झूठे दुकान। सही एक तुम्हारा सच्चा दुकान है। तुम बच्चे दुकान खोलते हो। बडे-2 दुकान खोलो। बडे-2 सन्यासियों को भी बडे-2 दुकान होते है तो ही बडे-2 मनुष्य आते है। शंकराचार्य बडा है नां तभी तो इन्द्रागांधी भी जाती है। देखते भी है कि शिव बाबा पुजारी है। तुमने पैक्टीकल मे देखा भी है कि कैसे पुजा करते है। वो तो कब भी पुज्य हो नही सकता है। पुजारी भक्त तो सभी है नां। भक्त-2 को माथा कैसे टेकेंगे। पुजारी पुज्य को माथा टेकते है। उनको भी प्रेम से समझाना है। तभी तो समझेंगे फिर अन्दर भी रखावेगा। परन्तु कर क्या सको है। सारा मान सारी बादशाही चट हो जावे। यह तो जैसे कि भारत के महाराजसये है। सभी उनको माथा टेकते है। राजाये भी माथा टेकते है। उनका शास्त्रो पर वाद-विवाद कैसे चलता है क्या-2 कहते है वो तो बाबा कहते है कि बच्चो ने भी देखा था। ऐसे युध करते है कि जो लड भी पडेंगे। सतयुग मे तो शास्त्र आद अथवा पुजा होती है नही है। भक्ति मार्ग की सामग्री बिलकुल ही अलग है। ऐसे नही कहेंगे कि भक्ति तो शुरु से ही चलती आई है। नही ज्ञान से होती है सदगति अर्थात दिन। वहां है सम्पूर्ण निर्विकारी। विश्व के मालिक थे। मनुष्यों को तो यह भी पता नही है कि लक्ष्मी-नारायण विश्व का मालिक थे। सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। बस और तो कोई धर्म होता नही होता है। बच्चो गीत भी सुना है नां कि आखिर तो वो संगम पर दिन आया आज जब कि हम बेहद के बाप से आ कर मिले है। बेहद का वर्सा पाने लिये पुरुषार्थ करते है। सतयुग मे तो ऐसे नही कहेंगे कि आखिर वो दिन आया आज। वो लोग तो समझते है कि बहुत अनाज होगा यह होगा। समझते है कि स्वर्ग की स्थापना हम करते है। गांधी जी भी की स्थापना करते थे। परन्तु क्या हुआ, जो पहले सुख था वो भी अब नही रहा है। गांधी तो जो भूख हडताल, पिकेटिंग, पत्थर मारना आद सिखा कर गये है वो ही सब अभी करते रहते है। सभी सामने आ रहा है। समझते है कि स्टुडण्टस का न्यु ब्लड है यह बहुत मदद करेंगे। इसलिये ही गवर्मेन्ट इन पर बहुत मेहनत करती है। और फिर पत्थर आद भी यही मारते है। हंगामा मचाने लिये पहले-2 स्टुडण्टस को ही छेडते है। वो बहुत होशियार होते है। इनको न्यु ब्लड कहते है। अब न्यु ब्लड की तो बात ही नही है। वो तो है ब्लड कनेक्शन। अब तुम्हारा यह है रूहानी कनेक्शन। कहते है बाबा मै आपको दो मास चार साल का बच्चा हुं। कई बच्चे तो रूहानी बर्थ डे भी मनाते है। ईश्वरिय बर्थ डे ही मनाना चाहिये। वो जिस्मानी बर्थ डे है सो तो कैन्सिल कर देना चाहिये। हम तो आत्मा की ही जिन्दगी ---

मिलावेंगें। मनाना तो यही चाहिये नो। वो है आसुरी जन्म। यह है ईश्वरिय जन्म। रात दिन का फर्क है। परन्तु जबकि निश्चय मे बैठे तबनां। ऐसे=ऐसे भी नही कि ईश्वरिय जन्म मना कर फिर आसुरी जन्म मे चले जावें। ऐसे भी होता है। ईश्वरिय जन्म मनाते-2 फिर रफूचक्र हो जाते है। बहुत करके पुरा बर्थ डे मनाते ही है। आजकल तो मैरिज डे भी मनाते है। शादी को तो जैसे कि बहुत अच्छा शुभ काम समझते है। जहन्नम मे जाने का दिन भी मनाते है। वण्डर है नां। बाप बैठ यह सब बाते समझाते रहते है। अब तुमको तो अपना ईश्वरिय बर्थ डे ब्राहम्णा के साथ मे मनाना है। हम तो शिव बाबा के बच्चे है हम बर्थ डे मनाते है। तो शिव बाबा कीही याद रहेगी। जो निश्चय बुधी है उनको ही जन्म दिन मनाना चाहिये। वो आसुरी जन्मही जिसेस ही की भूल जावे। यह सब बाबा राय उनको देते है जो कि पक्के निश्चय बुधी हो तो। बस अब तो हमबाबा के हो बन गेय। फिर अन्त मते सो गते हो जावगी। बाप की याद मे मरेंगे तो दुसरा जन्म भी वैसा ही मिलेगा। नही तो कहते है कि अन्त काल जो स्त्री सिमरे....। यहां पर फिर कहते है अन्त समय मे गगां का तट हो। गगां जल मुख मे हो तब प्राण तन से निकले। यह सारी भक्ति मार्ग की बाते। तुमको बाप समझाते है कि शरीर छूटे तो भी तुम स्वदर्शन चक्र धारी ही रहो। बुधी मे ही बाप और चक्र ही याद हो। बस। रोजाना जब याद करेंगें तो ही अन्त काल मे याद आवेगा नां। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो। आत्मा समझ और बाप को याद करो। क्योंकि अब तुम बच्चो को वापस जाना है नगें होकर। यहां पर पार्ट बजाते-2 तमोप्रधान से बने हो। अब सतोप्रधान बनना है। अब फिर सतोप्रधान बनना है। अब फिर सतोप्रधान बनना है। अब फिर सतोप्रधान बनना है। इस समय आत्मा ही अपवित्र है तो शरीर भी पवित्र कैसे मिल सकता है। बाबा ने बहुत मिसाल बताये है। फिर भी तो जवाहरात है नां। खाद जेवर मे नही सोने मे पड़ती है। 24से 22 कैरट बनाना होगा तो थोडी सी चांदी डालेंगें। अब तो सोना हैही नही। सबसे लेते रहते है। आजकल तो देखो नां नोट भी कैसे-2 बनाये है। कागज भी नही रहा है। बच्चे समझते है कि कल्प-2 ही ऐसा होता आता है। जांच रखते है। मार्क्स आदरवोलते है। जब किसीका झाड लिया जाता है नां। गायन भी है नांकिनकी दबी रेहगी धूल में.... आग भी जोर से लगती है। तुम बच्चे जानते हो कि यह होना ही है इसलिये ही यह बेग बेगेज तैयार कर रहे हो। और कोई को पता थोडेई है। तुमको ही वर्सा मिलता है 2।जन्मो के लिये। तुम्हारे ही पैसो से भारत को स्वर्ग बना रहे है। जिसमे तो फिर तुम्ही वास करेंगे। बाप कहते है कि तुम अपनी पढाई से अपने को आप ही तिलक देते हो। गरीब निवाज बाप आये है तुमको ऐसे दुनियां,स्वर्ग का मालिक बनाने के लिये। पढाई से ही तो बनेंगें नां। कृपा वा आशीर्वाद टीचर का तो पढाना धर्म है।कृपा की बात नही है। टीचर को सरकार से तनख्वाह मिलती है तो वो तो जरूर पढावेंगें ही नां। तुमको बडी गवर्मेन्ट से वर्सा वर्सा मिलता है।तुम पढते हो फिर पढाते हो। जितना पढावेंगें बनावेंगें उतना ही बढ्डा मर्तबा मिलता है। पदमपति बनते हो। कृष्ण के पावो मे पदम की निशानी देते है। तुम यहां पर आये हो भविष्य मे पदमपति बनने। सभी बहुत सुखी शाहुकार बनते हो। अमर बनते हो।तुम कालपर विजय पहनते हो। इन बातो को मनुष्य समझ नही सकते है। तुम्हारी आयु भी बडी हो जाती है। अमर बन जाते हो।उन्होने फिर पाण्डवों के चित्र ही लम्बे चौडे बना दिये है।समझते है कि पाण्डव इतने लम्बे थे। अब पाण्डव तो तुम हो। कितना रात दिन का फर्क है। मनुष्य कोई भी जास्ती लम्बा होता नही है।छे फुट का ही होता है। यह तो बहुत लम्बे-2 बना देते है। भक्ति मार्ग मे तो देखो क्या-2 होता है। कितने पुराने-2 चित्र है। पुराने से पुराना चित्र होगा भक्ति मार्ग मे। पहले-2 शिव बाबा की ही भक्ति होती है। वो तो बडा बनावेंगें हीनही। पहले शिव बाबा की भक्ति होती है। परन्तु अब तो तुमको अव्यभचारी याद मे रहना है।गुड मार्निग